।। मिनखा देह गुण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मिनखा देह गुण को अंग लिखंते ||

|| कुंडल्यो ||

लख चोरासी जूण में || अेक मिनखा देहि होय ||
गुण भारी करतार सूं || अेसो ब्रम्ह न कोय ||
अेसो ब्रम्ह न कोय || हद बेहद में जोई ||
अमर लोक जब जाय || धरे मिनषा देह कोई ||
सुखराम ओर किण जूण सूं || गर्भ न छूटे कोय ||
लख चोरांसी जूण मे || अेक मिनखा देहि होय || १ ||

(यह मनुष्य शरीर कैसा है और इस मनुष्य शरीर मे कितना भारी गुण है । उसे आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बताते है ।)यह मनुष्य शरीर चौरासी लाख योनी मे से ही एक है । परन्तु इस मनुष्य देह मे बहुत भारी गुण है । इस मनुष्य देह मे इतना भारी गुण है । कि कर्तार का देह भी इस मनुष्य देह के जैसा नही है । हद्द मे और बेहद्द मे सब देह देख लो(इस मनुष्य देह के जैसा दूसरा कोई भी देह नही है ।)सृष्टिकर्ता को अपने पारब्रम्ह के देह से चाहा तो भी उसे परस्पर याने (मनुष्य देह के बिना),अमरलोक मे जाते नही आता । इसीलिए सृष्टिकर्ता की देह से भी इस मनुष्य देह मे बडा भारी गुण है और इस मनुष्य देह के जैसा और ब्रम्ह याने देह नही है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इस मनुष्य देह के बिना अन्य किसी भी योनी से गर्भ मे आना नही छूट सकता है । || १ ||

कवत ||

संख ज्ञान मत धार || समझ नेहचल होय बैठो ||
तांकी मुक्त न होय || आद घर कदे न पैठो ||
जोग हट दम साझ || खेंच पुरब दिस ध्यावे ||
वे भी लंघे न पार || ब्रम्ह को देस न पावे ||
सेवा तीरथ पुन रे || ग्यान ग्रंथ बोहो होय ||
बिना भजण सुखराम क्हे || गर्भ न छूटे कोय || २ ||

इस मनुष्य देह मे कोई सांख्य योग का ज्ञान और सांख्य योग का मत,हृदय मे धारण करके नि:श्चिन्त होकर बैठा तो भी उसकी मुक्ती नही होगी । वह आदी घर याने सतस्वरुप के घर जाकर बैठ नही सकते । उसने सांख्य योग के ज्ञानवाले ये मनुष्य देह व्यर्थ गँवा देते । और कोई हठयोग की साधना करने वाला स्वाँस को पूर्व दिशा से खीचकर,भृगुटी तक पहुँच जाता । वो भी ही पार उतरेगें नही । उनको सतस्वरुप ब्रम्हका देश मिलेगा नही । तो हठयोगवाले ही देह व्यर्थ गँवाते है । और यह ऐसा मनुष्य शरीर प्राप्त होने पर भी कोई सेवा करता है,कोई तिर्थ करता है,कोई यज्ञ करता है । कोई पुण्य करता है,कोई वेद का ज्ञान सुनते और सुनाते है । ज्ञान के बहुत से ग्रन्थ पढते और

सुनते है तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये रामनाम का भजन किए बिना अपना मनुष्य देह वृथा गँवाते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि रामनाम का भजन किए बिना,किसी का भी गर्भ मे आना नही छूटेता । (भजन किए बिना सब व्यर्थ है ।) ।। २ ।।

ब्रम्हा को सुण संख ।। जोग शिवजी को होई ।।
नवद्या सबे बिद्यान ।। बिस्न को धरम संजोई ।।
आन देव बिध पूज ।। गोप मंतर जे सारा ।।
अे सब हद की बात ।। धार नर लंघे न पारा ।।
केवळ सास उंसास मे ।। राम रटयाँ सुं होय ।।
दसवों द्वार सुखराम कहे ।। बिना भजण नही कोय ।। ३ ।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि यह सांख्ययोग ब्रम्हा का बनाया हुआ है । इस सांख्ययोग की साधना करके ब्रम्हा के लोक मे जायेगे । और हठयोग महादेवजी का है । वे हठयोग की साधना करने वाले महादेव के लोक मे जायेगे और नवधा भक्ती की सभी विधी करके विष्णू के लोक मे जायेगे क्यो कि यह नवधा भक्ती विष्णू के लोक मे जाने का धर्म है और दूसरी जो अन्य देवताओ की पूजा,दूसरे सभी गुप्त मंत्र तो ये सभी हद्द के अन्दर की बाते है । इन्हे धारण करके कोई भी पार उतरेगा नही ।(सांख्ययोगवाले ब्रम्हाके लोकमे जायेगे,तो ब्रम्हा का लोक और ब्रम्हा भी प्रलयमे जायेगें । फिर वहॉ जानेवाले(ब्रम्हा का लोक मे)गर्भ मे आये बिना कैसे रहेगे । इसी प्रकार हठयोग साधनेवाले महादेव के लोक कैलाश मे जायेगे । तो कैलाश भी प्रलय मे मिट जायेगा और महादेव को भी काल खाता है । फिर वहाँ (कैलाशमे)जाने वाले का गर्भ मे आना कैसे छूटेगा और नवधा भक्ती करके विष्णू के लोक वैकुण्ठ मे जाते है तो वैकुण्ठ भी महाप्रलय मे मिटेगा और विष्णू को भी काल खाता है क्योकि जो दिखाई देता है,उन सबका नाश होता है तो ये ब्रम्हा,विष्णू,महादेव और वैकुण्ठ, कैलाश तथा ब्रम्हा का लोक,ये सब दिखाई देने के कारण इन सबका नाश होगा फिर उनके भक्त वहाँ(वैकुण्ठ,कैलाश और ब्रम्हालोक मे)जानेवाले नाश हुए बिना रहेगे क्या?फिर ये अन्य दूसरे मंत्र जो है,वो तो हद्द के ही है।)तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इन्हे धारण करके कोई भी पार नही जा सकता है । इन सब ने मनुष्य शरीर व्यर्थ गँवाया । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि कैवल्य तो स्वाँसो स्वाँस मे, रामनाम का रटन करने से होगा । तो रामनाम का भजन करे बिना दशवेद्वार दुसरा कुछ भी करनेसे खुलता नही है । ।। ३ ।।

सकल ग्यान कहे संत ।। मिनख तन धिन धिन होई ।।
सो कारण अेह जाण ।। मोख या बिन नहिं कोई ।।
जो उपजे बेराग ।। भक्त हिर्दे जो आवे ।।

सो नर नारी संत ।। ओर परले सब जावे ।।
सुखराम हद बेहद की ।। जो नर करे उपाय ।।
जब लग मिनखा देह को ।। गुण नहिं पायो आय ।। ४ ।।

सभी ज्ञान,सभी संत कहते है कि यह मनुष्य शरीर धन्य है । धन्य है । इसे धन्य कहने का कारण क्या है पूछोगे तो,उसका यही कारण है कि इस मनुष्य शरीर के अलावा दुसरे देह से मोक्ष नही होता है । इसीलिए इस मनुष्य शरीर को सभी धन्य कहते है । जिसे वैराग्य उत्पन्न होकर भक्ती हृदय मे आयी है । वे स्त्री–पुरूष सत्त है । शेष सभी प्रलय मे जायेगे । और जो मनुष्य हद्द बेहद्द उपाय करते है तब तक उन्हे मनुष्य देह के गुण का परिणाम नही मिला । ।। ४ ।।

साखी ।।

सिव धर्म ले मगन हूवा ।। ज्यान दया सुं जोय ।।
सुखराम तुरक एक तार रे ।। तीनुं उला होय ।। १ ।।

शिवधर्मी शिवधर्म लेकर मन मे मग्न हो गये है,जैन लोग,दया पालकर मनमे मग्न रहते है और मुसलमान लोग एकतार रखते है तो तीनो इधर की ही बाते है । ।।१।।

दया धरम इक तार रे ।। अे हद का राह होय ।।
सुखराम मोख को पंथ रे ।। नाम बिना नहिं कोय ।। २ ।।

यह दया पालना,शिवधर्म पालना और एकतार रखना ये तीनो हद्द के अन्दर के मार्ग है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि मोक्ष का रास्ता तो राम नाम के अलावा दूसरा कोई नही है । ।। २ ।।

दया सुरग ले जाय ।। धर्म सिव धाम रे ।।
के सुखराम इकतार ।। भेस्त को काम रे ।। ३ ।।

तो यह दया रखना,धर्म पालना और एक तार रखना,ये भी कोई झूठे नही है । दया रखने से,दया रखने वाले मनुष्य स्वर्ग मे जाता । शिव का धर्म रखने वाले महादेव के धाम(कैलाश)मे जायेगे और एकतार रखने वाले भेस्त मे जायेगें ।।।३।।

दया पुन इकतार को ।। अे हद का पंथ होय ।।
मोख मिले सुखराम क्हे ।। सो राहा न्यारो जोय ।। ४ ।।

दया,धर्म,एकतार का यह सब हद्द का पंथ है । मोक्ष पाने का रास्ता तो इनमे से अलग ही है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ।।। ४ ।।

।। इति मिनखा देह गुण को अंग संपूरण ।।